



**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा**  
भारत मौसम विज्ञान विभाग  
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय  
कानपुर, उत्तर प्रदेश



## मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 01-08-2025

कानपुर-देहात(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-08-01 ( अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-08-02	2025-08-03	2025-08-04	2025-08-05	2025-08-06
वर्षा (मिमी)	7.0	10.0	17.0	18.0	3.0
अधिकतम तापमान(से.)	32.0	33.0	31.0	29.0	30.0
न्यूनतम तापमान(से.)	26.0	27.0	26.0	25.0	25.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	91	90	95	97	96
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	61	57	74	79	76
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	12	12	13	11	10
पवन दिशा (डिग्री)	274	263	245	215	205
क्लाउड कवर (ओक्टा)	5	7	8	8	7
चेतावनी	आंधी और बिजली, तूफान आदि	कोई चेतावनी नहीं	आंधी और बिजली, तूफान आदि	आंधी और बिजली, तूफान आदि	कोई चेतावनी नहीं

### पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, आगामी पाँच दिनों में मध्यम से घने बादल छाए रहने के कारण दिनांक 02-06 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम तापमान 29.0-33.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य से 1-2°C कम रहने की संभावना है तथा न्यूनतम तापमान 25.0-27.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य से 1-2°C अधिक रहने की संभावना है। सापेक्षिक आर्द्रता की अधिकतम एवं न्यूनतम सीमा 90-97% तथा 57-79% के मध्य रहेगी। हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम रहेगी तथा हवा की गति 10.0-13.0 किमी प्रति घंटा रहेगी, तथा सामान्य से 6-7 किमी प्रति घंटा अधिक गति से हवा के झोंके आने की संभावना है।

### मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 2-6 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की चेतावनी है।

### मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सिंचाई का कार्य स्थगित रखें। खरीफ फसलों की बुवाई का कार्य वर्षा न होने की दशा में करें। वर्षा ऋतु में पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें।

## सामान्य सलाहकार:

बर्षा न होने की दशा में उर्द , मूँग, ज्वार एवं बाजरा आदि की बुवाई का कार्य करें। धान के खेतों की मेड़ों को मजबूत बनायें। जिससे बरसात का पानी खेतों में रुका रहे। पशुओं को बरसात के रुके हुए पानी को न पीने दें। कीटनाशकों, रोगनाशी और खरपतवारनाशी रसायनों के लिए, केवल साफ पानी से उपकरणों को धोने के लिए उपयोग करें और हवा की विपरीत दिशा में खड़े होकर कीटनाशी, रोगनाशी और खरपतवारनाशी स्प्रे न करें। यदि संभव हो तो, छिड़काव करने के बाद, खाने से पहले और कपड़े धोने के बाद हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोना चाहिए। चाहिए।

## लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सूचित किया जाता है कि वे सिंचाई का कार्य स्थगित रखें तथा बर्षा न होने की दशा में उर्द , मूँग, ज्वार एवं बाजरा आदि की बुवाई उचित नमी पर ही करें।

## फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
चावल	बर्षा न होने की दशा में धान फसल में सिंचाई का कार्य करें। धान की फसल में चौड़ी एवं संकरी पत्ती के खरपतवार के नियंत्रण के लिए बिसपाइरीबैक सोडियम 10%एस.सी. 0.20 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के 15-20 दिन बाद उचित नमी पर 500 -600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। धान में खैरा रोग दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु 20-25 किलोग्राम जिंक सल्फेट व 2.5 किलोग्राम चूना 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। धान की रोपाई के 25 से 30 दिन बाद 50 से 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया की टॉपड्रेसिंग करें। ध्यान रहे कि टॉप ड्रेसिंग से पूर्व खरपतवार निकाल दें तथा टॉपड्रेसिंग करते समय खेत में 2 से 3 सेंटीमीटर से अधिक पानी न हो। धान की फसल में जड़ जड़ की सुड़ी कीट का प्रकोप दिखाई देने पर कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4% दानेदार रसायन 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तीन से चार सेंटीमीटर स्थिर पानी में बुरकाव करें।
मक्का	मक्के की फसल में दूसरी निराई-गुड़ाई 35 -40 दिन बाद करें। मक्के की फसल में पहली टॉप ड्रेसिंग बुवाई के 30 से 35 दिन बाद तथा दूसरी टॉप ड्रेसिंग बुवाई के 40 से 45 दिन बाद 60 से 70 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया की टॉप ड्रेसिंग आसमान साफ होने पर करें। मक्के की फसल में तना बेधक / प्ररोह मक्खी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 % एस जी 4 ग्राम /हेक्टेयर अथवा डाइमैथोएट 30% ईसी 1.0 लीटर/हेक्टेयर की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम पर करें।
तिल	बर्षा न होने की दशा में तिल के फसल में पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 15-20 दिन बाद आसमान साफ होने पर करें।
मूँगफली	बर्षा न होने की दशा में मूँगफली के फसलों में बुवाई के 20 से 25 दिन बाद निराई करने के पश्चात 100 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से डालने के बाद हल्की गुड़ाई कर पौधों पर मिट्टी चढ़ाये।
काला चना	बर्षा न होने की दशा में बुवाई का कार्य करें। खरीफ में बोई जाने वाली उर्द की संस्तुति जातियां- नरेन्द्र उर्द-1, आजाद उर्द-2, आजाद उर्द-3, शेखर-1, शेखर-2, शेखर-3, पन्त यू-30 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए 12 -15 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से खाद एवं बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य करें।
मूँग	बर्षा न होने की दशा में बुवाई का कार्य करें। खरीफ में बोई जाने वाली मूँग की संस्तुति जातियां- नरेन्द्र मूँग -1, पन्त मूँग -1, पन्त मूँग -3, पन्त मूँग -4, सम्राट, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति श्वेता, स्वाति, विराट एवं आई पी एम -2 -14 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए 12 -15 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से खाद एवं बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य करें।
गन्ना	खेत से अधिक बर्षा जल निकास का उचित प्रबंधन करें। सफेद लट के नियंत्रण के लिए लाइट टैप या पौधों पर कीटनाशी छिड़काव कर नियंत्रण करें। शरद कालीन गन्ने को गिरने से बचाने के लिए बेधक अवश्य करें। खड़ी गन्ने की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई-गुड़ाई का कार्य करें। चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150-200 मि.ली. कीटनाशक दवा को 400 -500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

## बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	बर्षा न होने की दशा में बुवाई /सिंचाई का कार्य करें। खरीफ में रोपी जाने वाली सब्जियों जैसे- बैंगन, मिर्च, टमाटर और अगेती फूलगोभी आदि फसलों की नर्सरी डाले, साथ ही बैंगन / मिर्च की तैयार पौध की रोपाई करें। यदि खेत में पानी रुकने की संभावना है तो अगेती फूलगोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्च आदि की रोपाई मेड़ों पर करें। सब्जियों की फसलों में फल छेदक /पत्ती छेदक कीट की रोकथाम हेतु नीम आयल 1.5-2.0 मिली०/लीटर पानी में घोल बनाकर 3 -4 छिड़काव 8 -10 दिन के अन्तराल पर करें। सब्जियों की खड़ी फसलों में निराई - गुड़ाई का कार्य आसमान साफ होने पर करें।
आम	आम के पहले से भरे गए गड्ढों में नए पौधों का रोपाई का कार्य करें। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु २%कार्बरिल 1.5 % धूल का बुरकाव आसमान साफ होने पर करें।केले/पपीते के बागों की गुड़ाई-करके तने के चारो तरफ 25-३० सेंटीमीटर ऊंची मिटटी चढ़ा दे तथा केले के पौधों में स्टैंडिंग का कार्य करे।

#### पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भैंस	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पशुबाड़े में बाह्य परजीवी की रोकथाम हेतु चूने का छिड़काव करें। पशुओं को बर्षा के दौरान खुले स्थान/पेड़ के नीचे न बांधें। पशुओं को रात के समय आसमान साफ होने पर ही खुले में बांधें। पशुओं को दिन के समय छायेदार स्थान पर बांधें। पशुओं को खुरपका-मुँहपका रोग की रोकथाम हेतु एफ.एम.डी. वैक्सीन तथा लगड़िया बुखार से बचाव हेतु वी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण कराये। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी दिन में 3 -4 बार अवश्य पिलायें। गर्भित पशुओं को ढलान वाले स्थान पर न बांधें। पशुओं को पेट में कीड़ों की रोकथाम के लिए कृमिनाशक दवा देने का उचित समय है।

#### मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। मुर्गियों के बाड़े को साफ और सूखा रखें ताकि वे बीमारियों से बची रहें। मुर्गियों के स्वास्थ्य की नियमित रूप से जांच करें और बीमार मुर्गियों को झुंड से अलग करें। मुर्गियों को कीटों से बचाने के लिए, उनके बाड़े में कीटनाशक का उपयोग करें।

#### मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 2-6 अगस्त, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की चेतावनी है।
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

#### प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सिंचाई का कार्य स्थगित रखें। खरीफ फसलों की बुवाई का कार्य वर्षा न होने की दशा में करें। वर्षा ऋतु में पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें।
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------